

शुभ वेला (९६)

वाधाई है साईं जन्म की शुभ वेला अब आई है॥

बहार भई रस रंग रई नर नारि भई मन मोद छई
देवों ने फूलन वर्षा वर्षाई है॥

मात गोद भरी है हर्ष हरी प्रेम सुधा की लगी है आज
झरी

यह घड़ी प्रेम का प्याला संदेशा लाई है॥

लखि बाल वदन सुख राशि सदन

हो गए निछावर कोट मदन

चंहू और नभ धरणि में जै मंगल की धुनि छाई है॥

चिरु जीवो लला होवे भाग भला

बीजचंद्र जियां तेरी बाढ़े कला

प्रेम मगन हो जननी तंहि प्रेम दूध पिलाई है॥